॥ श्री गुरु प्रसंन्न: 1

॥ मम जेन्मं सफलं सिव सिव स्मरणं
॥ भव जेलनि धी तरणं मम ॐ नाहं
॥ सिव परतर दैवन जानं सिवपाद
॥ प्रमाणं भस्मरुद्राक्ष सर्वाभरणं सिव
॥ मुखे प्रधानं हार सिव शंकर वि स्वेस्व
॥ र मद करुणाकर सिव हृदय ध्यानं

॥ १॥ कल्याणं सिवतव मंगलदानं
॥ दुरितानी [illegible] कहरणं सायं माध्यानं
॥ प्रात: स्मरणं दिनजेन उध्यारणं
॥ कमलाचल [illegible] प्रियकर पुजि
॥ कमलोभ्दव श्रुतिध्य दस्तवनं: २
॥ प्रनवं बिजाक्षर सिव बिर सुन्यं
॥ सगुन वन नव नुन्यं आ घं आत:

2

॥ श्री गुरु बसवलिंगायेनम: 3

॥ गुरु रूप होके दाहलरे नेहां
॥ विस्व ब्रंह्म सत्य वाहलरे ॥ ॐ
॥ गुरु स्वरूप द्रिष्टि आनंदमय श्रृष्टि
॥ मायामगा जग आहलरे ॥ १॥
॥ गुरु रूप मन होउ चितु [illegible] न वि

॥ भ्रया मध्या नाहि बांहलरे ॥ २
॥ सिवदिन के द्वारि दुसरि नाहि
॥ सरि दरु सेण आवस्यकि हलेरे ॥
॥ ३॥ गुरु रूप होके दाहलरे नेहां
॥ विस्व ब्रंह्म सत्य वाहलरे ॥ ॐ

4